नौशाद अली द्वारा फिल्म में लोक संगीत का प्रयोग

प्रो. शर्मिला टेलर
संगीत विभाग, वनस्थली विद्यापीठ
प्रियश्वेता श्रीवास्तव
शोधार्थी, वनस्थली विद्यापीठ

भारत देश में फिल्मों में संगीत आने से पहले भी संगीत था, जब फ़िल्में नही बना करती थीं तब भी लोग अपना मनोरंजन गीत संगीत से ही करते थे जिसे हम लोक संगीत कहते है। भारत देश में अनेक राज्य है जिसमें क्षेत्रीय भाषाएं होती है और उन्हीं भाषाओं में सभी लोग अपने गीत–संगीत गाते हैं, लोकगीत गाँवों के गीत होते है। ये गीत बहुत वर्षों से चले आ रहे है इसमें रीति–रिवाज की झाँकी मिलती है। लोकगीत विभिन्न संस्कारों में गाये जाते हैं जैसे– शादी में विदाई गीत, बन्ना गीत, सोहर गीत, जच्चा गीत, सोहर, खिलौना, किसानों के गीत आदि बहुत से अवसरों पर गाये जाते हैं। लोकगीत, चैती, कजरी, आल्हा, बिरहा, बाऊल, भटियाली, माँझी आदि लोकगीत है जो क्षेत्रीय है जो अपने राज्य की पहचान है, जैसे– 'बिरहन' उत्तरप्रदेश का लोकगीत है, कजरी भी वहीं से सम्बन्धित है, 'आल्हा' बुन्देलखण्ड का लोकसंगीत है जो वहाँ गायी जाती है।

''लोकगीत ऐसा गीत है जिसकी धुन कान में पड़ते ही अपने गाँव की मिट्टी की खुशबू हमारे दिल में आत्मा में समा जाती है। लोकगीत ने हर युग को बड़ी सुन्दरता से प्रतिबिम्बित किया है। इसी वजह से लोकगीत हर रंग में सदाबहार है और हमेशा ही रहेंगे। इंसान के दु:ख–सुख, प्यार–प्रीति, रीति–रिवाज, चाल–चलन, आचार–विचार, तीज–त्यौहार, अनुष्ठान, जुबान, अदब, तेहजीब, संस्कृति, धर्म, आस्था, विश्वास तथा कला के आंगन में वीणा के तारों की झंकार से लोकगीत ही नही बल्कि लोक कथा का भी इतिहास उभरता है।''1

लोकसंगीत की वजह से फ़िल्मों ने भी काफी ऊँचाईयाँ प्राप्त की। जगह–जगह के लोकगीतों की धुनों ने फिल्मी दुनियाँ में चार चाँद लगा दिये। फ़िल्मी दुनियाँ संगीत का सागर है जहाँ हर प्रकार का संगीत जो हमें सुनने को मिलता है उसकी मीठी धुनें हमारे कान में मीठा रस घोलता है जिससे हमारे रोम–रोम खिल जाते हैं।

फिल्मों में जो भी संगीतकार आए जहाँ से भी आए वहाँ की मिट्टी लेकर आए, उनके गीत में वहाँ की मिट्टी की सुगन्ध आती है। सभी संगीतकार अपनी–अपनी जगह से हीरे–मोती लेकर आए जो उनकी कला के रूप में झरने की तरह बह निकली और सभी आम जन के दिलों में समा गई और सबको आत्मविभोर कर दिया।

फ़िल्म संगीत में अपने प्रदेश से आए संगीतकार जैसे मास्टर गुलाम हैदर जी, ओ.पी.नैयर जी ये पंजाब से आए हुये संगीतकार थे, इन्होंने फ़िल्मों में पंजाबी लोकसंगीत देकर फ़िल्मों में धूम मचादी थी। आर.सी.बोराल, अनिल बिस्वास, सलिल चौधरी, एस.डी.बर्मन ये सभी संगीतकार बंगाली लोक संगीत लेकर आए और फ़िल्मों में जो भी लोकसंगीत पर आधारित गीत दिया वह बहुत लोकप्रिय हुआ।

''नौशाद अली जी ने फ़िल्मों उत्तरप्रदेश के लोकसंगीत से जन्मी लोकधुनों को लेकर फ़िल्म संगीत को अपनी लोकधुन से सजाकर ऊँचाईयों पर पहुँचाया कि अनायास ही वाह निकल जाती है।''2

नौशाद जी ने फ़िल्मों में अवधि भाषा का प्रयोग किया जो कि उत्तरप्रदेश की ही शैली है, उन्होंने फ़िल्म 'सन्जोग' (1943) में गीत है 'पपिहरा काहे शोर मचावे' गीत में अवधि भाषा का प्रयोग किया इसमें नौशाद जी ने पाश्चात्य वाद्ययंत्र का प्रयोग किया उसके बाद 1944 में आई फ़िल्म 'पहले आप' में जोहरा–बाई अम्बाले वाले जी गीत गाया 'मोरे सईयां जी ने भेजी चुनरी' जी बहुत ही सुरिला लोकगीत है।

1957 में आई फ़िल्म 'मदर इंडिया' के बारे में तो सब जानते ही है ये फिल्म उस समय की डाइमण्ड जुबली फिल्म थी यह फिल्म उत्तरप्रदेश की ही देहाती शैली में बनाई गई थी यह फिल्म महबूब खान के निर्देशन में बनी थी। इसके सभी गीत प्रसिद्ध हुये जिसमें नौशाद जी ने सुप्रसिद्ध लोकसंगीत दिये है, उसमें उन्होने होरी गीत में संगीत दिया। 'होरी आई रे कन्हाई होरी आई रे, गाडी वाले गाडी धीरे हाँक रे, दूर कोई गए धुन ये बजाए तोरे बिन छलिया रे बाजे ने मुरलिया रे' इसमें नौशाद जी ने गजब का लोकसंगीत दिया। जिसे हम सुनते है तो यही महसूस होता है कि हम गाँव में हैं और इन गीतों में अपने प्रदेश की मिट्टी की खुशबू आती है और मन आनन्द होकर झूमने लगता है।

''नौशाद जी ने अपने लोक संगीत में जो वाद्ययंत्र का प्रयोग किया उसने तो उनके लोकसंगीत में धमाल ही मचा दिया। नौशाद जी ने अपने संगीत में विचित्र वीणा, वट्टा बीन, सुरबहार, सारंदा इस वाद्य यंत्र में चार–पाँच वायलिन से ज्यादा साउण्ड होता था, सारंगी, जलतरंग, तबला तरंग, डुग्गी तरंग, पंजाब के ढोल, राजस्थानी ढोल, बंगाली ढोल, नक्कारा, ताशा, पखावज आदि का प्रयोग किया।''3

1961 में आई फिल्म 'गंगा जमुना' और 1968 में आई 'संघर्ष' फिल्म में देखने को मिलता है। गीत के बोल है– फिल्म गंगा जमुना में 'नैन लड़ जहिये तो मनवा मा कसक होइबे करी' रफी जी की आवाज में जबरदस्त लोकगीत है। जिसमें पूरी तरह ग्राम्य परिवेश दिखाया गया है, और 1968 में ही संघर्ष फिल्म का लोकगीत 'मेरे पैरों में घुंघरू बंधा दे तो फिर मेरी चाल देखले' इन लोकगीतों में तड़कता–फड़कता संगीत जो हमारे पैर को जमी पर रूकने नहीं देता और हम आज भी झूमने को मजबूर हो जाते हैं।

नौशाद जी के कुछ प्रमुख फिल्मी लोकसंगीत गीत निम्न प्रकार है–फिल्म 'आदमी' 1968 'कारी बदरिया मारे बहरिया, (1971) में आई फिल्म पाकीजा का गीत जो बहुत लोकप्रिय हुआ था। 'इन्ही लोगों ने ली लीना दुपट्टा मेरा' लता जी की आवाज में बहुत सुन्दर रचना पेश की थी नौशाद जी ने फिल्म 'गंगा जमुना' का ही लोकप्रिय गीत 'तोरा मन बड़ा पापी' आशा जी की आवाज में यह गीत बहुत लोकप्रिय हुआ था। मदर इंडिया का ही गीत लता जी की आवाज में 'घूंघट नही खोलूंगी', फिल्म लीडर में 'दईया रे दईया लाज मोहे लागे', फिल्म धर्मकांटा में आशा रफी जी की आवाज में 'ये गोटेदार लहंगा निकलूं जब डाल के' बहुत लोकप्रिय हुआ। फिल्म शारदा का गीत 'पंछी जा, पीछे रहा है बचपन मेरा' सुरैया जी की मधुर व सुरीली आवाज का जादू इस गीत में देखने को मिलता है जो उस समय की बहुत ही लोकप्रिय गीत था। सन् 1943 में 'नमस्ते' फिल्म आई उसका गीत 'जादूगर मोरी नगरिया में आए' जिसे जी. एम. दुर्रानी साहब ने गया। 1944 में रतन का गीत 'सावन के बादलो व अंखिया मिलाके जिया भरमा के चले नहीं जाना' ये गीत उस समय की ब्लॉक बॉस्टर फिल्म थी और गीत था। 1945 में सन्यासी का गीत 'नैनो में कृष्ण मुरारी, और सुनो जी प्यारी कोयलिया बोले इस गीत को जोहरा बाई ने व अमर ने गाया। उस समय के चर्चित गीत है। 1941 (मेला) में 'गाये जा गीत मिलन के' मुकेश जी की आवाज में, 1949 में 'दिल्लगी' का गीत 'तू मेरा चाँद में तेरी चाँदनी' व मुरली वाले मुरली बजा। 1952 में 'बैजू बावरा' का गीत 'तू गंगा की मौज मैं जमना का धार' रफी जी व लता जी की आवाज़ में बहुत ही सुरीला गीत है। 1954 में शबाब का गीत 'जोगन बन जाऊँगी' ऐसे अथाह लोकगीत का योगदान नौशाद जी ने फ़िल्मों में किया।

नौशाद जी बहुत सच्चे व ईमानदार व्यक्ति थे उन्होंने अपना काम बहुत ही लगन से किया, उन्हें भगवान पर बहुत विश्वास था, जब तक जिये नौशाद साहब सिर्फ संगीत के लिए ही जिए, उन्होंने फिल्मों में नायाब रत्न दिये जिसकी कोई बराबरी नहीं की जा सकती, नौशाद साहब आने वाले पीढ़ी के लिए एक मिसाल हैं संगीत की दुनियां में।

अभी साजे दिल में तराने बहुत हैं,
अभी जिन्दगी के बहाने बहुत हैं
दरे गैर पर भीख न माँगों फन की
जब अपने ही घर में खजाने बहुत है।

– नौशाद जी

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. विमल, (2005), डॉ. विमल, हिन्दी चित्रपट एवं संगीत का इतिहास, संजय प्रकाशन, पृष्ठ सं.–190
2. विमल, (2005), डॉ. विमल, हिन्दी चित्रपट एवं संगीत का इतिहास, संजय प्रकाशन, पृष्ठ सं.–192
3. https://youtube/ROIGTE9H760
DD Archives Exclusive (by. S.y.Quraishi)